PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE-42 VOLUME-8 IMPACT FACTOR-10.25

ISSN-2454-6283 Oct.-Dec. - 2025

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

शोध-ऋतु

International Scientific [illegible], Copernicus, Cosmos,
Ijif, Sjif, Saji, Gif, Thomson Reuters [illegible], Scopus, ICI, Oajif Etc.

सम्पादक
डॉ. सुनील जाधव

तकनीकी सम्पादक
अखिल जाधव

web:- www.shodhritu.com
Email - shodhrityu78@yahoo.com
WhatsApp 9405384672

Shodh-Rityu

(Quarterly)

Open Transparent PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE-42 | VOL- 8 | IIFS Impact-10.25 | ISSN-2454-6283 | Oct. to Dec.-2025|

OUR OTHER EMPACT FACTOR & REFERRED RATED AGENCY'S

INTERNATIONAL SCIENTIFIC INDEXING, COPERNICUS, COSMOS, IIJF, SJIF,
SAJI, GIF, THOMSON REUTERS EDWIN, SCOPUS, ICI, OAJIF ETC.

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

Editor
Dr. Sunil G. Jadhav, Nanded
9405384672

Technical Editor
Anil Jadhav, Mumbai

Address for correspondence:
Maharna Prtap Housing Society, in front of Hanumangarh Kaman, Nanded-431605

18.चरकसंहितायां प्रतिपादितरसाख्यगुणस्य समीक्षणमेकम्। 51
– [1]चन्दनभट्टाचार्य्यः, [2]नारायणदासः, ... 51
19.रमणिका गुप्ता : स्त्री विमर्श की सशक्त हस्ताक्षर.......... 55
–वी.अनीता 55
20.संत परंपरेतील मानवी मूल्यदृष्टी : भक्ती, करुणा आणि सामाजिक समता 57
–[1]शेळके उमाकांत पांडुरंग, [2]डॉ.लक्ष्मण नागोराव वाघमारे.......... 57
21.समकालीन कथाकार रमेशचंद्र शाह का साहित्यिक दृष्टिकोण.......... 59
–पुरी गोदावरी.......... 59
22.शिक्षा में सामाजिक बदलाव की भूमिका 62
–मनोज कुमार.......... 62
23.शांता कुमार की आत्मकथा ' निज पथ का अविचल पंथी ' में जीवन मूल्य 64
–संतोष कुमारी 64
24.तेरा संगी कोई नहीं: संकटों से जूझते किसान की करुण कथा 66
–[1]नेहा देवी, [2]डॉ.रविकांत, ... 66
25.दलित परिवारों में महिलाओं के प्रति संकुचित दृष्टिकोण 69
–डॉ.गायकवाड तक्षशिला.......... 69
26.बस्तर की भाषाई स्थिति और हिंदी 71
–ज्वाला प्रसाद कश्यप.......... 71
27.प्रवासी भारतीयों का अंधविश्वास : 'इतर' उपन्यास के परिप्रेक्ष्य में 73
–[1]नम्रता सिंह, [2]डॉ. पिंकी पारीक.......... 73
28.हिन्दी स्त्री लेखन में शिक्षा की भूमिका और स्त्री स्वतंत्रता का स्वरूप 76
–एस.सिरिशा 76
29.भारतीय वर्ण व्यवस्था में ज्योतिबा फुले के दृष्टिकोण.......... 78
–[1]साधना गुप्ता, [2]काली चरन स्नेही,.......... 78
30.भीष्म साहनी के उपन्यासों की वस्तुभूमि 79
–डॉ.छट्ठु राम 79

कर कार्य करते रहे। मुख्यमंत्री या मंत्री पद पर रहते हुए भी लेखक अपने दायित्वों को निजी लाभ से ऊपर रखते हैं। कर्मयोग की भावना एवं आत्मचिंतन ने उन्हें भीतर से विवेकी बना दिया। लेखक ने आध्यात्मिक दृष्टि से जीवन की कठिन घटनाओं के बाद आत्ममंथन करना और अनुभवों से सीख लेकर आगे बढ़ना सीख लिया। आत्मज्ञान एवं विवेक उन्हें एक योगी की तरह जीवन जीना सिखाते हैं। राजनीति में सत्तारूढ़ पार्टी के विजेता सांसद होकर भी सक्रिय राजनीति से संन्यास लेते हैं और अपने 'नर सेवा, नारायण सेवा ' के आध्यात्मिक दृष्टिकोण से जीवन को साहित्य एवं समाज कल्याण के लिए समर्पित करते हैं। "मैंने पूरा जीवन जी लिया। जी भर जिया ,पूरे आनंद से जिया ।जीवन जिया भी और उसके पूरी कहानी और अनुभव आज विस्तार से लिख भी दिया। जीवन का शेष विवेकानंद सेवा केंद्र में प्रभु को अर्पण करूंगा ।अब इस घड़ी की प्रतीक्षा करूंगा ,जब मुझे इस बार का दायित्व निभाकर वहां जाना है जहां से मैं आया हूं। सच कहता हूं हंसता–मुस्कुराता गीत गाता हुआ जाऊंगा।"[9]

निष्कर्ष: लेखक का जीवन आध्यात्मिक मूल्यों से प्रेरित कर्मयोगी जीवन है। वे अध्यात्म को उपदेश नहीं, बल्कि जीवन के आचरण में उतार कर प्रस्तुत करते हैं। इस शोध–पत्र के माध्यम से 'निज पथ का अविचल पंथी' में सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं आध्यात्मिक जीवन मूल्यों ने लेखक के जीवन को नैतिकता, सेवाभाव, सत्यनिष्ठा, त्याग, राजनीतिक शुचिता एवम् जनकल्याण से जोड़ा है। यह आत्मकथा जीवन मूल्यों का प्रेरणादायक स्रोत है जो व्यक्ति को विकट परिस्थितियों में डगमगाने नहीं देती और सत्ता मिलने पर अहम से भरने नहीं देती।

संदर्भ सूची –(1) माचवे प्रभाकर,हिंदी साहित्य कोश,संपादक धीरेन्द्र वर्मा, पृष्ठ 604 (2) रामधारी सिंह दिनकर,आधुनिक बोध,पृष्ठ 48 (3) हेमराज कौशिक, मूल्य और हिंदी उपन्यास,पृष्ठ39 (4) श्री विनोबा भावे,जीवन और शिक्षण,पृष्ठ 116 (5) शांता कुमार,निज पाठ का अविचल पंथी ,पृष्ठ 21 (6) वही, पृष्ठ 38 (7) वही पृष्ठ,223 (8) वही, पृष्ठ 244 (9) वही पृष्ठ 424

24.तेरा संगी कोई नहीं: संकटों से जूझते किसान की करुण कथा

–[1]*नेहा देवी*, [2]*डॉ.रविकांत*,
[1]शोधार्थी, [2]शोध निर्देशक,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

भारत एक कृषि प्रधान देश है। भारतीय जीवन का मूल स्रोत कृषि व्यवसाय है। जिसका विस्तार हमें ग्रामीण जीवन में दिखाई देता है। अतः हम कह सकते हैं कि ग्राम में भारत की आत्मा अर्थात् कृषक बसते है। कृषि कार्य करने वाले इन किसानों का जीवन खेती की कठिनाइयों और आर्थिक संघर्षों से जूझते हुए निकल जाता है। अथक परिश्रम करने के बाद भी भारतीय किसान संघर्ष एवं कठिनाइयों भरा जीवन जीने को मजबूर है। हमारी सरकारों ने समय–समय पर किसानों के हित को ध्यान में रखते हुए कृषि एवं कृषक कल्याण की योजनाएँ बनायी हैं। इन योजनाओं का लाभ इन तक पहुंचा भी है, किन्तु हर एक किसान तक इनका उचित लाभ पहुँचा हो, यह कहना भी कठिन है। भारतीय किसान के जनजीवन को आधार बनाकर साहित्य में वृहद स्तर पर लिखा, पढ़ा और सराहा गया है। डॉ. हरिमोहन शर्मा लिखते है कि" कथाकार जब छिन्न–भिन्न भाव बोध से ग्रस्त हो, साहित्य के प्रांगण में कदम रखता है तो आज के समय और समाज के यथार्थ को समझते और उससे जूझते हुए वैसे ही पा पात्रों की सृष्टि करता है जो आज के समाज का सच है।"1

आज भी किसान जीवन से जुडी रचनाओं का स्मरण करते ही सर्वप्रथम सुधी पाठकों के ध्यान में गोदान उपन्यास ही आता है। गोदान के बाद भी किसान जीवन से जुड़े कई उपन्यास प्रकाशित हुये जिनमें फाँस,अकाल में उत्सव, अगम बहै दरियाव, ढलती साँझ का सूरज, सोनामाटी आदि प्रमुख हैं। कई उपन्यासकारों और कहानी कारों ने गृहस्थ जीवन को आधार बनाकर अपनी कलम चलायी है। ऐसे ही उपन्यासकारों में एक चर्चित नाम मिथिलेश्वर का भी है। उनका चर्चित उपन्यास 'तेरा संगी कोई नही'कृषक जीवन के यथार्थ को उद्घाटित करने की दिशा में एक उल्लेखनीय उपन्यास है। 'तेरा संगी कोई नहीं' उपन्यास में कृषक जीवन की बुनियादी संरचना के तहत कृषि के निरंतर उपेक्षित अभावग्रस्त बनते जाने के कारणों का राइ रक्स उजागर करता यह उपन्यास कृषक जीवन, कृषक समाज और कृषि समस्या का जीवंत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। संपूर्ण कथा प्रमुख रूप से बलिहारी गाँव बलेसर नामक किसान और उसके खेत बत्तीस बिगहवा को केंद्र में रखकर रचा गया है। यह उपन्यास किसान जीवन के आर्थिक संघर्ष, पारिवारिक संघर्ष, दहेजकी समस्या, नई पीढ़ी के वैचारिक संघर्ष ,खाद बीज पानी की समस्या, और कृषि जीवन की विविध समस्याओं के यथार्थ को वाणी प्रदान करता है। राजकिशन जैन ' किसानों की टीस का जीवंत चित्रण' शीर्षक से समीक्षा करते हुए दैनिक ट्रिब्यून में लिखते हैं कि– "वरिष्ठ साहित्यकार मिथिलेश्वर ने अपने उपन्यास' तेरा संगी कोई

नहीं में खेती बाड़ी के सहारे पेट पाल रहे किल्लत और कमनसीबी के सहारे बेबस व बेकसूर किसानों तथा गरज मंद मजदूरों की है।अनवरत उपेक्षा एवं उनके रसातल मे धंसते जानें के कारणों की बारीकी से पड़ताल की है ।यह उम्दा उपन्यास झंझट में फँसे किसानी जीवन, खेतिहर समाज और कृषि कर्म से जुड़ी समस्याओं का जीता जागता विश्लेषण पेश करता है।2" मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। साहित्य समाज का दर्पण होता है। लेखक कथाकार अपने आस–पास के समाज मे जो कुछ देखता है ,सुनता है महसूस करता है जिसका उसे एहसास होता है,उन सभी को वो अपनी लेखनी से चित्रबद्ध करता है। उपन्यास' तेरा संगी कोई नहीं' में कृषक जीवन की विविध समस्याओं को उद्घाटित किया गया है।

उपन्यास में पुरानी पीढ़ी व नयी पीढ़ी के विचारों में मतभेद से उत्पन्न होने वाली पारिवारिक विघटन की समस्या दिखाई देती है। उपन्यास में हमें शिक्षा को लेकर दो पीढ़ियों के भिन्न –भिन्न विचार दृष्टव्य होते हैं बलेसर का मानना है कि वो बत्तीस बिगहवा का मालिक है और इसलिए उसके बेटों को नौकरी के लिए कहीं भटकने की आवश्यकता नहीं है। गाँव और आस–पास के जितने स्तर के स्कूल हैं वहीं तक पढ़ाई कर लें इतना बहुत है दूसरों की चाकरी भीखनिदान की उक्ति के सहारे खेती का महत्व समझाते हैं, किन्तु शहर में जाकर अध्ययन करने वाला कुलराखन अपनी मेहनत के बल पर सचिवालय के सहायक के पद पर चयनित हो जाता है, किंतु बलेसर को उसकी नौकरी करना उचित नहीं लगता ।वह उसे खेती की महत्ता और नौकरी की कमी बताते हुए कहता है–" ऐसी नौकरी में जाकर क्या करोगे [illegible]? यह तुम्हारी प्रतिष्ठा के अनुकूल नहीं है....। तुम्हारे ऊपर का अधिकारी तुम्हें आदेश देगा यहाँ के तुम एक अच्छे खेतिहर हो तुम्हें [illegible] द्वारा कायम यह सदाबहार खेती है ।इस खेती से हम खा –पी रहे हैं और मन लायक जीवन जी रहे हैं। यहां सबसे बड़ी बात यह है कि अपनी इस खेती मे हम स्वतंत्र हैं ,किसी के गुलाम नहीं। लेकिन नौकरी तो गुलामी ही है वहाँ अधिकारियों के आदेश पर तुम्हारा जीवन [illegible] बना रहेगा।"3 इस प्रकार बलेसर परंपरागत किसानी में विश्वास [illegible] वाला है और चाहता है कि उसका बेटा भी उससे जुड़ा रहे किंतु [illegible] पीढ़ियों के वैचारिक संघर्ष को हम यहां बड़ी स्पष्टता से देख सकते [illegible] न केवल कुलराखन बल्कि उसी की तर्ज पर छोटा भाई मनराखन [illegible] चल पड़ता है वह भी शहर में पढ़कर अच्छी नौकरी हासिल कर [illegible] भविष्य सुरक्षित करना चाहता है। तीसरा बेटा जगपूरन धीरे–धीरे [illegible] शहरी जीवन से इस कदर प्रभावित होता है कि वो अपनी माँ के [illegible] शहरी और ग्रामीण जीवन की तुलना कर शहरी जीवन को [illegible] बताता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने दुनिया की एक चौथाई [illegible] को प्रभावित करने वाले अकेलेपन को जन स्वास्थ्य के लिए [illegible] माना है। यह एक ऐसी स्वास्थ्य समस्या है जो दीर्घकाल में [illegible] की बीमारियों की वजह बन सकती है।

लेकिन कोई सार्वमान्य माप न होने के कारण इसकी गंभीरता का पता लगाना मुश्किल है ।मिथिलेश्वर के उपन्यास 'तेरा संगी कोई नहीं' मे अजनबीपन व अकेलेपन की भयावह स्थितियों का वर्णन भी मिलता है।जीवन और समाज की विसंगतियों के फलस्वरूप व्यक्ति को एकाकीपन अजनबी पन या ऊब की अनुभूति होती है। यहां भी सत्य है कि संबंधों से टूटा हुआ पुरुष–स्त्री से अधिक अजनबी या अकेला होता चला जाता है। आज के मनुष्य को चारों ओर मृत्यु, भय,संत्रास, अकेलापन और अजनबीपन का बोध निगल रहा है। वर्तमान समय मशीनी युग है, जहाँ इंसान को दूसरे इंसान की कद्र नहीं है। एक दिन बलेसर की पत्नी लकवा ग्रस्त हो जाती हैं। बलेसर उन्हें शहर के सबसे अच्छे अस्पताल में दिखाते हैं, लेकिन डॉक्टर बताते हैं की उन्हें ठीक होने में समय लगेगा इससे बलेसर को अपनी पत्नी के साथ शहर में रुकना पड़ता है। जब वह धान की कटाई के लिए गांव आते हैं तो उन्हें घर में पत्नी की अनुपस्थिति व अकेलापन काटने को दौड़ता है इसी प्रकार जब बलेसर बेटों के साथ रहने लगते हैं तो वहाँ भी इतने व्यस्त शहर में खुद को अकेला महसूस करते हैं। जब पत्नी साथ थी तब भी बेटों ने खेत बेचने की बात उठाई थी लेकिन तब वे किसी भी दिन अनिद्रा के शिकार नहीं हुए घर में अकेला रहने से अकेलापन उन्हें परेशान करता है। मन की उद्विग्नता और बेचैनी एक क्षण भी उन्हें सुकून से नहीं रहने देती है। बलेसर जब गाँव में अकेले होते हैं और कूदन की पत्नी उन से खाना खाने के लिए कहती है इस अवसर पर उन्हें अपनी पत्नी की कही बात याद आ जाती है। "बिना खाए नहीं सोना चाहिए"4 इस पर जब वह पूछते हैं कि बिना खाये क्यों नहीं सोना चाहिए तो इसके प्रति उत्तर में पत्नी का कथा निम्नवत है– "या क्यों क्या। बस इतना समझ लीजिए कि बिना खाए नहीं सोया जाता है।"5 बलेसर को परिवार के साथ बिताए गए सुखद पलों की स्मृतियां उन्हें परेशान करती हैं। वास्तव में अकेलेपन की समस्या मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए हितकर नहीं है।

भारत में गरीब किसानों के आंतरिक पलायन में वृद्धि हो रही है। अनौपचारिक क्षेत्र में गरीब आमतौर पर आकस्मिक मजदूरों के रूप में पलायन करते हैं ।बदलती सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों ने किसानों के मददगार खेतिहर मजदूरों की भी कमी कर दी। गाँव में एक समय ऐसा था जब किसानों को अपनी फसल बोने और काटने आदि के समय खेतिहर मजदूर आसानी से मिल जाते थे। उनके सहयोग से किसान अपनी खेती का काम सहजता से संपन्न कर देते थे किन्तु धीरे– धीरे गाँव से शहरों की ओर पलायन तथा अन्य कारणों से गाँवों में खेतिहर मजदूरों का अभाव होने लगा। किसानों पर इसका प्रत्यक्ष और परोक्ष प्रभाव पड़ा है। इन परिस्थितियों ने किसानों व खेतिहर मजदूर दोनों को प्रभावित किया उपन्यास के प्रमुख पात्र बलेसर ने इस पीड़ा को अभिव्यक्त किया है–"जहां एक एक ओर किसानों की खेती कमज़ोर हुई है। कृषि व्यवस्था की बुनियाद डगमगाई है, वहीं जीविका के अपने पारंपरित स्त्रोत से अलग बनिहार ,चरवाह

और खेत मजदूर गांव से शहर तक अपना पेशा बदलते तथा गांवों से पलायन करते रहे हैं। इस परिस्थितियों में न किसान सुखी हुए और न उन मजदूरों की स्थिति बदली।"6 भारत एक कृषि प्रधान देश है। जिस कारण भारत की अर्थव्यवस्था पूर्णता कृषि पर आश्रित है।

भारतीय समाज में किसान की दशा अत्यंत दयनीय व शोचनीय है ।किसान के जीवन की एक समस्या खाद, बीज एवं पानी की समस्या है। इस समस्या का 'तेरा संगी कोई नहीं' में यथार्थ वर्णन किया गया है। कृषकों को मालगुजारी भी देनी पड़ती थी लेकिन नहर का सरकारी पानी कभी समय पर नहीं आता भरपूर मात्रा में तो आता ही नहीं। रात में लोग जगह– जगह नहर काटकर चोरी से उसका पानी अपने खेतों तक पहुँचा लेते। नहर के इस पानी की चोरी में ही उनके गाँव के सरभू सिंह की हत्या हो चुकी थी। भारतीय कृषि मुख्यतः प्रकृति पर निर्भर है वर्षा यदि समय से न हो तो खेतों को सूखे से बचाना अत्यन्त कष्टकर और दुष्कर हो जाएगा। इसी प्रकार खाद की समस्या को लेकर भी किसानों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। धान की खरीद के तीनों केंद्रों फैक्स ,व्यापार मंडल और राज्य खाद्य निगम के लाभ–हानि का भी वर्णन दृष्टव्य है। बढ़ती महंगाई गिरते जलस्तर, सूखते कुँओं और कीड़ों से हुए फसलों के नुकसान आदि कारणों से किसानों की आत्महत्या की घटनाएं भी बढ़ रही हैं। उपन्यास का पात्र जगत नंदन अपनी प्रतिक्रिया इस प्रकार देता है–"यदु नाथ भाई यह तो हम भी देख रहे हैं कि हम किसानों के लिए फैक्स से लेकर विभिन्न क्रय केंद्र तथा खाद बीज और डीजल के लिए अनुदान के साथ कृषि विभाग के माध्यम से कृषि संयत्रो एवं अन्य लाभों के लिए हमें नाकों चने चबाने पड़ते हैं। सरकारी अनुदान तक पहुंचते–पहुंचते हमें पता चलता है कि सरकार द्वारा मिलने वाली सब्सिडी दौड़ धूप करने और नजराना दिए जाने में ही समाप्त हो गयी है।"7 इस प्रकार के कथनों के माध्यम से हम सरकारी कार्यप्रणाली का यथार्थ जान सकते हैं विविध सरकारी योजनाओं के लाभ के चर्चे भी यहां हैं किन्तु किसानों को लगता है कि लापरवाही, कामचोरी और घूसखोरी के कारण इन योजनाओं का वास्तविक और पूरा लाभ किसानों तक नहीं पहुँच पाता है। किसानी से सिर्फ रोजमर्रा की जरूरत भर का कमाने वाले किसान के जीवन में जब कोई बड़ा काम आ जाता या अपनी बेटी की शादी जैसा अवसर होता है तो किसान के पास इतने पैसे की बचत नहीं होती कि वो बिना किसी जोड़–तोड़ के उस कार्य को पूरा कर सकें। बलेसर के जीवन में भी कुछ ऐसा ही हुआ बत्तीस बिगहवा का मालिक होने के बाद भी उसे अपनी बेटी की शादी के दहेज के लिए अपनी जमीन का एक हिस्सा जयराम सिंह के पास गिरवी ही रखना पड़ा। यह स्थिति केवल बलेसर की ही हो ऐसा नहीं है ये लगभग प्रत्येक भारतीय किसान की स्थिति है। यहां भारतीय ग्रामीण जीवन में व्याप्त दहेज जैसी कुप्रथा और किसानी जीवन पर उसके दुष्प्रभाव भी देख सकते है। अपनी बेटी सुरभि के लिए शादी पर बलेसर को भी अपने खेत रेहन पर रखने पड़े। इस पर उसकी पत्नी बलेसर से कहती है कि–"अब और विलंब ठीक नहीं। खेतों को छोड़कर दहेज देने का कोई दूसरा साधन तो हमारे पास है ही नहीं और फिर हम ही क्या पूरे गाँव में देख लीजिए, जिसकी बेटी की शादी लगती है उसे अपने कुछ कुछ खेत हटाने ही पड़ते हैं चाहे बेचकर या रेहन रखकर।"8 समाज में ऐसा दृश्य प्रत्येक कृषक परिवार में देखने को मिल जाता है। इसका प्रमुख कारण यह है कि इंसान समाज में अपना रुतबा व सम्मान बनाए रखने के लिए शादी व्याह जैसे संस्कारों में आवश्यकता व हैसियत से अधिक धन व्यय कर देते हैं जिसके कारण वह ऋणी हो जीवन पर्यन्त इस कर्ज से मुक्त नहीं हो पाता है इसका दृष्टांत उदाहरण हमें इस बलेसर जैसे किसान के रूप में देखने को मिलता है।

उपन्यास के अंत तक आते आते स्थितियाँ बदल जाती हैं बलेसर भी अब टूटने लगता है फिर भी वो हिम्मत रखकर स्थितियों से दो चार होने से हार नहीं मानता है। पत्नी की बीमारी पर बलेसर को पुत्रों की सहायता लेनी पड़ती बेटे भी अवसर की तलाश में थे। यह अवसर उचित जान तीनों बैठे अपनी मां और पिता को बार–बार समझाने लगते हैं वे विविध तरीकों से मां के हृदय में यह बात बैठाने का प्रयास करते हैं कि उन्हें अब खेती की ज़मीन भेजकर शहर में घर बना लेना चाहिए। इस प्रकार मां भी परिस्थितवश बेटों की बातों में आने लगती है। इस पर बलेसर उसे यथार्थ से अवगत कराते हुए कहते हैं कि–" कुलराखन की माँ अपनी बीमारी से मुक्त होने के लिए तुम स्वयं प्रयास नहीं करोगी तो दवाओं से कुछ नहीं होगा। बेटे और बहुओं ने शहर में अपने साथ रहने का जो आकर्षण हमें दिखाया वह सब मृग–मारीचिका है उसे भूल जाओ...। जैसे ही अपनी खेती बेचकर शहर में हम उनके पराश्रित हो जाएंगे वे हमें पूछेंगे तक नहीं ।अभी अपनी जरूरत पर हमारी आवभगत कर रहें हैं। यहाँ अपनी खेती किसानी में जिस सुख सन्तोष स्वाभिमान और स्वतंत्रता के साथ हम जी रहे हैं। वहां हमारा सब कुछ समाप्त हो जायेगा।"9 इस प्रकार बलेसर अपनी पत्नी को यथार्थ से अवगत कराने का प्रयास करते हैं किंतु परिस्थितियाँ उसके साथ कुछ और ही करती है पत्नी को लकवा हो जाने से अब इलाज लंबा चलना है। गाँव में फसल काटने गया बलेसर इसी चिंता में टूटता जाता है वह नहीं समझ पाता है कि परिस्थितियों से समझौता कर बेटों की बात माने या फिर खेती को बचाए रखे। अब इस दुविधा में वह भी बीमार रहने लगता है। एक दिन उसका मृत शरीर बत्तीस बिगहवा के पास पड़ा मिलता है। रचनाकार इस प्रकार बलेसर के माध्यम से भारतीय किसान का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। उपन्यास का शीर्षक भी उचित ही लगता है। यहां बलेसर का संगी कोई नहीं होता न बेटे न बहुएं और न ही पत्नी इस प्रकार वो अकेले संघर्ष करते हुए अंत में उसकी मृत्यु हो जाती है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि यह उपन्यास 'तेरा संगी कोई नहीं' बलेसर की कथा के माध्यम से भारतीय किसान जीवन का

चित्रण प्रस्तुत होता है। यह बलेसर के माध्यम से केवल एक परिवार या गाँव की कथा मात्र नहीं बल्कि भारतीय ग्रामीण जीवन और सम्पूर्ण किसानो की कथा बनकर उभरती है।

संदर्भ-ग्रंथ सूची–(1)बलराम की संकलित कहानियाँ,बलराम, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, दूसरा संस्करण 2013, पृष्ठ संख्या 108 (2)http://www.daniktribuneonline.com/archive/features/ किसानो की टीस का जीवन–चित्रण–1113015 (3)तेरा संगी कोई नही– मिथिलेश्वर, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पहला पेपरबैक,संस्करण 2018,पृष्ठ15 (4)वही,पृष्ठ संख्या–169 (5)वही, पृष्ठ संख्या–169 (6)वही, पृष्ठ संख्या –12 (7)वही पृष्ठ संख्या–58 (8)वहीं पृष्ठ संख्या–33 (9)वही पृष्ठ संख्या–148

25.दलित परिवारों में महिलाओं के प्रति संकुचित दृष्टिकोण

–डॉ.गायकवाड तक्षशिला
सहायक प्रोफेसर,
एसएसआर डिग्री कॉलेज, निजामाबाद, तेलंगाना

दलित परिवारों में महिलाओं को आगे बढ़ाने के लिए कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उसके कई कारण हैं–मुख्य रूप से गरीबी, शिक्षा की कमी, सामाजिक–सांस्कृतिक परंपराएँ, लिंग भेद, बाल विवाह, अंध विश्वास आदि दलित परिवारों में आर्थिक परिस्थिति का सामना अधिक दिखाई देता है। क्योंकि पहले उनको जाति का सामना करना पड़ता था। आर्थिक स्थिति से उभरने के लिए जो काम मिला उसे स्वीकार करना पड़ता था। गोदड़ियाँ सीना, कपड़े सीना, लिफाफे बनाना, घोड़ों को घास काटकर खिलाना, लाशों को ढोना, कूड़ा कचरा साफ करना आदि अत्यंत कष्टदायक काम करना उनके नसीब में था। इस कमाई से जो भी पैसा आता था परिवार का पालन पोषण में ही चला जाता था। इस कारण पुरुष पढ़ने की बात तो दूर महिलाओं को पढ़ने का नाम भी नसीब नहीं होता था। पढ़ने की इच्छा तीव्र रहने पर भी हालातों के आगे झुकना पड़ता था। शहर से दूर गाँवों में रहने वालों के विचार महिलाओं के प्रति अलग रहता है। उनकी मानसिक संतुलन यही सोचता है कि लड़की पराई धन है। पढ़–लिखकर नहीं, बल्कि हर वर्ग में इसका शिकार लड़कियों को होना पड़ रहा है।

गाँवों में अंध विश्वास : गाँवों के लोग अधिकतर अंधविश्वास में अत्यधिक विश्वास रखते हैं। छोटी–छोटी समस्या के प्रति भयभीत होते थे। इसी उपरांत शिकंजे का दर्द आत्मकथा में सुशीला जी ने अंधविश्वास का जिक्र इस प्रकार किया है कि जब सुशीला जी के बचपन में नींद में डरने की आदत थी तब नजर उतारने की प्रक्रिया अलग प्रकार की होती थी। मोटी रस्सी का एक फुट लम्बा टुकड़ा मूँगफली के तेल में एक तरफ से भिंगोकर जलाया जाता। दूसरी तरफ हाथ से पकड़कर सुशीला जी के सामने लटकाकर रखा जाता था। नीचे पानी से भरी पीतल की बड़ी थाली में जलती गरम तेल टपककर गिरते समय छन्न–छन्न की आवाज होने लगती। मामा जी उन्हें एकटक जलती रस्सी को देखने के लिए कहते हैं। नीचे पानी से भरी पीतल की बड़ी थाली रखी जाती थी। रस्सी से गरम तेल टपककर गिरते समय छन्न–छन्न आवाज आती थी। थाली को पानी में डाल दिया जाता था। इसके बाद उनके मामा कुलदेवताओं की कसम खाते हुए सुशीला जी से कहा कि "उतर गई नजर अब नहीं डरेगी", इसी प्रकार टुकड़ा–टुकड़ा जीवन आत्मकथा में से और एक घटना घर परिवार में जब भी कोई औरत माँ बनती तो उसे कुछ समय के लिए ससुराल में अछूत रहना पड़ता था। उनके खाने–पीने की व्यवस्था अलग से की जाती थी। उनकी थाली और लोटा आदि वस्तुएँ अलग रखे जाते थे। सुशीला जी की ननद तो देवी शरीर में आये जैसा बर्ताव करना उस